बी.ए. तृतीय वर्ष

शास्त्रीय नृत्य (कथक)

प्रथम प्रश्न पत्र (सैद्धान्तिक)

इकाई–1

भारत का सांस्कृतिक इतिहास।

इकाई–2

भारतीय मिथकीय विधान का परिचय। वेदों का अध्ययन।

इकाई–3

अभिनय एवं उसके प्रकारों का अध्ययन, नाट्यशास्त्र के अनुसार आंगिकाभिनय के विभिन्न भेद – मस्तकाभिनय, दृष्टियों के प्रकार, लक्षण व रस योजना, पुतलियों के प्रकार और लक्षण, दर्शन के विविध प्रकार, पुरकर्म (पलक), कपोल कर्म, अधरोष्ठ कर्म, चिबुक कर्म और मुखज कर्म : प्रकार, लक्षण व रस योजना।

इकाई–4

नाट्यशास्त्र व अभिनय दर्पण के अनुसार नायिका भेद, भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में नायिका की अक्धारणा व प्रयोग।

इकाई–5

जयपुर घरानो के नर्तक–गुरुओं एवं समकालीन नर्तकों का जीवन परिचय।

हस्तलिपि से सत्यापित

16/6/20

17/6/20

बी.ए. तृतीय वर्ष

शास्त्रीय नृत्य (कथक)

द्वितीय प्रश्न पत्र (सैद्धान्तिक)

इकाई–1

हिन्दी साहित्य में रीतिकाल, भक्ति काल व आधुनिक काल का अध्ययन, नृत्य पर उनका प्रभाव।

इकाई–2

कथक की मन्दिर, दरबार व मंचीय परम्परा, कथक की नटवरी व रास परम्परा एवं कथक नृत्य से उसका सम्बन्ध, कथक का परिवर्तित स्वरुपः वर्तमान समय में नवाचार (एकल, युगल व समूह नृत्य के सन्दर्भ में)

इकाई–3

अभिनय दर्पण के अनुसार देव हस्त, जाति हस्त, दशावतार हस्त, बान्धव हस्त और नवग्रह हस्तों का अध्ययन। पूर्वरंग, लोकधर्मी नाट्यधर्मी, मार्गी–देसी और वृत्ति–प्रवृत्ति की जानकारी।

इकाई–4

प्राचीन एवं मध्ययुगीन ग्रन्थों में वर्णित अवनद्ध वाघों के पाराक्षर तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन। नाट्यशास्त्र में वर्णित अवनद्ध वाघों की वादन विधि से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या तथा वर्तमान वादन–विधि में उनकी उपयोगिता।

इकाई–5

चौताल, एकताल व धमार ताल में बोल बन्दिशें लिपिबद्ध करना, राजा छत्रपति सिंह और पागलदास जी की रचनाओं को तीनताल में लिपिबद्ध करना।

हस्तलिपि से सत्यापित

16/6/20

17/6/20

बी.ए. तृतीय वर्ष

शास्त्रीय नृत्य (कथक)

प्रायोगिक

1. हस्तमुद्राओं का प्रायोगिक प्रदर्शन – संयुत हस्त, असंयुत हस्त, नृत्त हस्त, देव हस्त, जाति हस्त, दशावतार हस्त, बान्धव हस्त एवं नवग्रह हस्त।
2. ग्रह, जाति, यति की बन्दिशें एवं दर्जा, फरमाईशी, नवहक्का, प्रिमलू व नटवरी बोलों का तीनताल में प्रदर्शन।
3. एकताल, चौताल व धमार ताल में – धार, आमद, तोडे, टुकडे, चक्करदार, परण, कक्ति तत्कार व बॉट–का प्रदर्शन।
4. भक्तिकालीन कवि तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई की रचनाओं पर अभिनय प्रदर्शन।
5. नायिकाओं पर अभिनय – अभिसारिका, खण्डिता और कलहन्तरिता।
6. लखनऊ घराने की विशिष्ट बन्दिशों का प्रदर्शन।

हस्तलिपि से सत्यापित

16/6/20

17/6/20